साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN: 2454-2695
Volume 01 Issue 03
April 2015

शहरी कृतिमता

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

बदल गया है युग

आया है गया चुग

कृतिमता का

आधुनिकता का

भूल गये हम प्रकृतिको

बदल लिया अपनी प्रकृतिको

भूल गये सुबह का समुद्र हवा

जिसने कहा था पुर्वजो ने हवा

शहर मे है हमने देखा

सिर के ऊपर सुहब शाम

हिलते रहते है पंखा

हिलते रहना है इसका काम

पता नही कितनी गर्म है गर्मी

लगा दिया है घर मे कुलर

ढंड की भी परवाह नही

कहते है हम सदी

लगा दिया है एसी

वाताकुल

रहते है शहर मे हम

सालो भर एक सा मौसम

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454-2695
Volume 01 Issue 03
April 2015

बाहर नही

अपने घर मे

कार्यचालय और दफतर मे

देखने को नही मिलेगें

हरे-हरे पेड़ पौधे कही

पर गर दफतर की दिवारो पर

कुल जंगल और पहाड़

के ही अनेक तश्वीर

लगा दिये है कील ढोककर

आने वाले अतिथियो के

भूल गये करना सत्कार

पर लिख कर टाँग दिया है गेट पर

स्वागतम

अतिथि देवो भवः